Review Of Research
ISSN 2249-894X

Impact Factor : 3.1402(UIF)
Volume - 5 | Issue - 2 | Nov - 2015

नासिरा शर्मा की कहानियों में नारी जीवन संघर्ष

मुनेश्वर एस.एल.[1] , ज्योती विट्ठलराव लोखंडे[2]
[1]हिन्दी विभाग,पीपल्स कॉलेज,नांदेड.
[2]शोधछात्र, हिन्दी विभाग , पीपल्स कॉलेज,नांदेड.

प्रस्तावना:

नासिरा शर्मा हिन्दी साहित्य जगत की सशक्त लेखिका है । नासिरा शर्मा में गहन,चिंतन-मनन की शक्ति है । उन्होने अपने आस-पास के जन-जीवन को अधिक निकटता से देखा है । नासिरा शर्मा महिला साहित्यकार होने के कारण महिलाओं की ययार्थ दशा, उनकी मानसिकता का एवं अधिकारों का सूक्ष्मवर्णन कर सकती है उतना शायद पुरूष साहित्यकार न कर सके ।

नासिराजी ने नारी से संबंधित विविध समस्याओं का केवल उद्घाटन ही नही किया, अपितु उन समस्याओं का समाधान भी प्रस्तुत किया है जो नारियों को सम्मान से जिनेके लिए सिखाता है ।

नासिरा जी के संदर्भ में डॉ.राजेंद्र चौहान ने कहा है- ''नासिरा शर्मा हिंदी साहित्य का एक ऐसा ज्वलंत हस्ताक्षर है जिनसे अपने अनुभव जगत को रचनात्मकता के केंद्र में रखकर उसे देशकाल के ओर-छोर तक विस्तृत कैनवास पर फैला दिया है । मुस्लिम समाज मे रुढियों के बंधनो से जकडी नारी जाति की बेबसी और लाचारी का चित्रण हिन्दी मे सिर्फ नासिराजी ने ही किया है ।''

शताब्दियों से पीडीत नारी अब मुक्त होने के लिए प्रयत्नरत दिखाई देती है ।परिवार तथा समाज द्वारा लादे गए बंधनों को ठुकराने की क्षमता उसने प्राप्त कर ली है । आधुनिक नारी उच्च शिक्षा ग्रहण कर रही है । वह खुद के फैसले खुद लेने में सक्षम बन रही है । अपने अधिकार समझने लगी है तथा उसका उपयोग भी करना जान चुकी है । आधुनिक नारी पुरूष के पीछे नही पुरूष के साथ कदम से कदम मिलाकर समानता का अधिकार चाहती है और उसके लिए बड़ी तत्परता से संघर्षशील भी है । नारी को पुरूष का गुलाम होना, उसका आश्रित होना पसन्द नही, अब वह स्वतंत्रता चाहती है समाज में और वैचारिक भूमिपर भी । अपने प्रति युगों से किए गए अत्याचारों को वह पहचानना जान चूकी है और स्वयं आगे बढकर अन्याय को समाप्त करने का प्रयास कर रही है । नारी अब स्वयं निर्भर बनने की कोशिश में है ।

आज अर्थ व्यवस्था के प्रत्येक क्षेत्र में उसका प्रवेश है । ''अंतरराष्ट्रीय आर्थिक सर्वेक्षण के ऑकडे बताते है कि राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में महिलाओं का योगदान पचास से अस्सी प्रतिशत के बीच है । इसके अलावा ऊसके उपर पारीवारीक जिम्मेदारीयों का बहुत बड़ा बोझ भी है ।'' वह एक साथ माता, पत्नी, बेटी, बहन, सांस,बहू आदि कई भूमिकाएँ परिवार में बखूबी निभाती है ।

नारी की लड़ाई मानवीय अधिकारों के लिए है । किसी पुरूष के विरोध में नही । फ्रेंच समीक्षक सीमन-द-बुआने कहा है -'' स्त्री अमीर हो या गरीब श्वेत हो या काली उसे अपनी लढ़ाई खुद लढ़नी होगी ।''[3] स्पष्ट है कि विश्व की नारियाँ जागृत होने लगी है अपनी लढ़ाई खुद लढ़ने के लिए । नारी जान गई है कि उसे यदि अपनी अस्मिता बनाए रखना है तो उसे अपनी क्षमता को पहचानना होगा और कार्य करना होगा ।

प्रस्तुत आलेख में नासिराजी की कहानियों में नारी जीवन संघर्ष के विविध आयामों का विवेचन प्रस्तुत करने का प्रयास है। नासिराजी का कहानी संग्रह 'खुदा की वापसी' और'इनसानी नस्ल' की कतिपय कहानियों में यह संघर्ष तीव्रता से उभरकर आया है ।

'खुदा की वापसी'कहानी संग्रही की 'दहलीज' यह कहानी नारी अस्तित्व की लडाई को दर्शाती है । इस कहानी में तीन लडकियाँ सकीना, शाहीन, हुमैराका भाई जावेद मॉ-बाप और दादी रहते है । सामिन ने बढ़ते खर्च के कारण अपनी बड़ी लड़की सकीना की पढ़ाई

छुडवा दी । इण्टर पास सकीना सारें दिन घर में घुटती माँ-दादी को कहती है कि बी.ए. करने की इजाजत अब्बू से दिलवा दे । सकीना कहती है कि ट्युशन करके फिस का पैसा निकाल लेंगी । किसीपर बोझ नही बनेगी । उसका भाई जावेद विरोध दर्शाते कहता है कि बस हो गई पढाई । बी.ए. की पढाई के लिए बस में धक्के खाते दूर जाना पडेगा । दादी ने फैसला सुनाया कि ''चुपचाप घर में बैठकर माँ का सिलाई में हाथ बटाओं वरना आरिफ मियॉ की इज्जत पर राह चलते ढेले फिकेंगे ... निगोंडा मोहल्ला भी कैसा है नदीदों का जैसे औरत कभी देखी न हो, सर झुका कर अपने काम से काम नही रखेंगे, परायी औरंतों की ताकझाँक में लगे रहेंगे... खुदा ने चाहा तो साल छह महिने में तेरी डोली उठ जाएगी ।''[4] दादी की बातें सुनकर सकीना की आँखे भर आयी । आक्रोश से उसने होठ काटे अैर बेबसी से दादी को घूरा । दादी नही चाहती कि उसकी पोती को कोई ताकझाँक करे । मोहले के लोग अपने काम से काम नही रखते । औरतों को ताकते रहते हैं।

दादी को लडकियों का नौकरी करना पसंद नही है । सामिन कहता है -'' आपने पोतियों की तालीम पर रोख नही लगायी तो फिर नौकरी करने पर आपको क्या एतराज है ? मुझे लगता है, पढ़ी-लिखी लड़कियों को यूँ घर बिठाना जुल्म है । इसलिए कोई मुनासिब नौकरी अगर इन्हे मिलती है तो जरुर करे कोई हर्ज नही है ।''[5] सामिन आधुनिक विचारोवाला है पर दादी उसकी नही सुनती । भाई जावेद का कहना है कि '' मरदों से मुकाबला करनेवाली हर लड़की घटिया और बदतमीज होती है ।''[6] सामिन बेटे की ऐसी बात कहने पर चकीत होते हैं उसे जबान को लगाम देने को कहते है आरे इज्जत करना । सीखो कहता है । सामिन अम्माँ से कहता है कि लडकियों को जहर देकर मार डालिए या फिर उन्हे इन्सान की तरह जीने का हक दीजिए । दादी कहती है - '' कल किसी को पसंद कर लायी और मुँह पर कालिख पोत दी तो मुझे मत कहना कुछ । 'अक्कल तो लाएँगी नही, अगर थोडी देर के लिए मान लेता हूँ कि ला भी सकती है तो मुझे यकीन है, वह इन्सान का बच्चा ही लाएँगी अम्मा, ने यह आपकी औलादे है गलत कदम क्यों उठाएँगी, इन पर शक करने की मुझे कोई ठोस वजह नजर नही आती ।''[7]

सामिन को अपनी लडकियों पर विश्वास है कि वह गलत कदम नही उठाएँगे । सामिन अपने बेटे को कहता है'' माँ के पैरों के नीचे जन्नत है और बहनें उसी जन्नत का दुसरा नाम होती है ।'' [8] सामिन औरतो की इज्जत करता है मान सम्मान देता है । सामिन सोचता है अगर जावेद की जगह एक और लडकी हो जाती तो क्या फर्क पडता । क्योंकी अम्मा पोतियों से ज्यादा पोते को महत्व देती है । दादी का मानना है कि नस्ल बेटों से चलती है । लड़कियाँ तो मुँडेर पर बैठी गौरया की तरह है अपने बसेरे को उड जाएँगी, पलटकर नही आएँगी । बुरे वक्त का साथ लड़का होता है वो काना क्यों न हो । दादी के यह पुराने खयालात है जो पोतियों से ज्यादा पोते को प्यार करती है । पोते को विजा के लिए पच्चास हजार रुपये दिलवाती है उसका वह शौक भी पूरा कर दिया । मगर पोतियों को किताब या मॅगजीन खरीदने के लिए पैसे नही देती ।

हुमैरा बड़ी हिम्मत से घर की दहलीज पार करने मे सफल होती है । हर बार उसे लगता है कि दादी बूरा मान जाएँगी । '' दादी आगे नही हमेशा पीछे देखती है उन्हे वक्त का पहिया किस तेजी से उन्हे पीछे छोडता आगे बढ रहा है । उनका अतीत अभी भी मेरा वर्तमान नही बन सकता है ।''[9] हुमैरा आधुनिक विचारोंवाली है जो खुद अपने बलबुते पर से रिसेप्शनिस्ट की नौकरी करके अपने परिवार का खर्चा चलाती है ।

इस कहानी में युवा पात्र हुमैरा है जो उसमें उमंग है । वह जिंदगी को जिंदगी की तरह जीना चाहती है । खुले आकाश में पंख लागाकर उड़ना चाहती है । परंतू नई-पुरानी पीढ़ी की टकराहट और उनेक समस्याएँ उसके संस्कार,धर्म, समाज उसे बार-बार मथ देते हैं । पर हुमैरा भी दिल -ही-दिल में कहती है - ''कैद और आजादी के बीच अकलमन्द से दूर मुझे वहाँ तक जाना है जहाँ आसमान और जमिन मिलते हैं ।''[10] दादी के पुराने विचार है जो लड़कियों को ज्यादा पढाने के पक्ष में नही है । वह पोतियों पर विश्वास नही करती । पोते पर पूरा विश्वास करती है । लड़की पर सभी लोग अंकुश रखने की कोशिश करते हैं नयी पिढ़ी के पात्र होने के बावजूद भी उसे अपना स्वतंत्र, अस्तित्व एवं करिअर बनाने की छूट नही दी जाती ।

'खुदा की वापसी' इस संग्रह की 'दूसरा कबूत्तर' यह कहानी सादिया, रूकइया और शहाब उर्फ बरकत की है । शहाब मिडिल इस्ट में बहुराष्ट्रीय कंपनी में काम करता है । उसकी पत्नी रुकइया और उसे तीन बच्चे हैं । वह बरकत बनकर सादिया से धोके से विवाह करता है । कुछ दिनों बाद रुकइया और सादिया को शहाब का उसली चहरा सामने आता है । रुकइया कहती है, '' उन्हे दूसरी शादी की जरुरत क्यों पड़ी जबकी न मैं पागल हूँ न बाँझ हूँ । न जेल गई नं घर से, शहर से सालो गायब रही ... या मैं बीबी के फरायज नही पूरा कर पायी... उनकी देखरेख में कमी नही की फिर भी मुझे यह दिन देखना पडा ।''[11] रुकइया अपने सारे जिम्मेदारियाँ बखूभी निभा रही है तो शहाब को दूसरी शादी करने कि क्या जरुरत पड़ी यह सोचकर तणाव में आ चुकी है । शहाब सादिया और रुकइया में से किसी एक को भी छोडना नही चाहता । लेकिन सादिया का दिल नही मानता ''नही, हरगिज नही मोहब्बत तो एक से होती है । घर एक के साथ

ही बसता है और जोड़ा भी दो का एक होता है । तर्जुबा चाहे जितनों से कर लिया जाए ।''[12] सादिया और रुकइया अजीव कश्मकश में दिखाई देती है ।

लेखिकाने इस कहानी में नारी पात्रों द्वारा नया कदम उठाया है । रुकइया का यह कहना '' तुम्हारी लढाई मेरी लढाई है । मुझे गैर न समझना हमारी जात एक है, पहचान और नस्ल एक है ।''[13] एक नारी अगर दूसरी नारी का साथ दे तो वह हर मुश्किल बात सुलझा सकती हैं । मगर एक नारी दूसरी नारी को दुश्मन मानती है । जिससे बात सुलझने के बजाए उलझ जाती है । ऐसे में पुरूष अपने आप को आधिक शक्तिशाली समझने लगतें हैं । लेखिका ने इस कहानी को पांरपारिकता के ढाँचे मे न ढालते हुए नया मोड दिया है। अत: आधुनिक नारी के जीवन संघर्ष को दिखाया है । रुकइया कहती है '' हम दोनो तो तलाक दे सकते है ।''[14] रुकइया शहाब को तलाक देती है और अपने मइके कराची चली जाती है। महिने में एक बार बच्चों को देखने की इजाजत मिलती है शहाब को । तलाक के बाद वो सादिया को मनाने की बहुत कोशिश करता है । मगर हर बार उसे यही जवाब मिलता कि वह घर पर नही लाईब्रेरी गयी हुई है । शहाब को एकाएक डाक से उसे सादिया की शादी का कार्ड मिला। ''बरकत को लगा कि उसके गाल पर दूसरा झन्नाटेदार चाँटा पड़ा है और उसके हाथो में दबा कबुतर खुले आसमान में पहले कबुतर के पीछे उड गया है।''[15] इस कहानी में पुरूषों की मनमानी दिखाई देती है । पुरूष अगर धोके से स्त्री का अस्त्वित्त्व न मानते हुए दूसरी शादी कर सकता है तो स्त्री भी उसको तलाक देकर अपना स्वतंत्र एवं अस्तित्व बना सकती है ।

नारी और पुरूष में यदि किसी नारी का पति कमजोर है, बेबस है तो उसकी पत्नी को कई प्रकार की सामाजिक एवं मानसिक यंत्रनाओं से गुजरना पड़ता है । इन्ही कारणों से वह साहस भी जुटा लेती है और चरित्रहीनता का लांछन लगते ही वह बदले और आक्रोश की भावना से ग्रसित हो जाती है । अपने ऊपर होनेवाले अत्याचारों के खिलाफ नारी आवाज उठाना जान गई है ।

'इनसानी नस्ल' कहानी संग्रह की 'अग्निपरिक्षा' यह कहानी कम्मो की है ।उसका पती अपाहिज है । कम्मो की जमिन के पास नया रेल्वे का स्टेशन बनने के कारण उसकी जमीन किंमती हो जाती है और उसे हड़पने के लिए ही सारा कुचक्र रचा जाता है । कम्मों के चरित्र का लांछित करने का जो कुचक्र मंगलू और सुन्दरलाल करते है, उसे पानी की धार और सरा दिखाने की परिक्षा का भय दिखाकर उसकी जमीन हड़पना चाहते हैं, वही कम्मों अपनी चतुराई से प्रशासन के सहयोग से अपराधियों को न्याय के कठहारे में खडा कर देती है ।

मंगलू कहता है कि सुंदर लाल ने मुझे बहकाया था । कम्मो निर्दोष है । कम्मों के पैरो पर गिरपड़ा और उससे क्षमा मागने लगा । कम्मों को न्याय मिल जाता है, परंतु लेखिका की टिप्पणी है कि ''मगर तारीख शाहिद है कि इतिहास हर बार अपनी घटनाओं को नए सिरे से दोहराता, इन्सानों की बार-बार की गई गलतियों को मुक प्रहरी की तरह देखना भर है ।''[17]

कम्मो बड़े साहस से सुंदरलाल एवं मंगलू के रचे हुए कुचक्र मे न फसते हुए उसके ऊपर होनेवाले अत्याचारों का विरोध करते हुए अपनी जमीन उन पापियों के हाथ नही लगने देती । इस प्रकार संघर्षशील नारी ही पुरूष प्रधान संस्कृति में टिक पाती है ।

नासिराजी ने नारी को पुराने सडे-गले, संस्कारों से मुक्त करने का प्रयास किया । महिला होना उनकी नजरों में न हीनता की बात है और न ही कमजोरी की बल्की नारी होना सम्मान की बात है ।महर्षि रमन ने कहा -'' पति के लिए चरित्र,सन्तान के लिये ममता समाज के लिये शील और जीवन मात्र के लिए करुणा संजोनेवाली महाकृति का नाम नारी है ।''[18] नारी को अनेक भूमिकाएँ निभानी पडती है । और नारी हर भूमिका बखूबी निभाती है । नासिराजी की कहानियाँ नारी के विभिन्न रूपों को प्रस्तुत करती है, साथ ही नारी अस्मिता, स्वआस्तित्व और संघर्ष करने की प्रेरणा देती है ।

संदर्भ सूची:

1) मालती जोशी का कथात्मक साहित्य- डॉ राजेन्द्र सिंह चौहान पृ.क्र.36
2) बीसवी शताब्दो के अंतिम दशक की कहानियों में नारी -डॉ. बबनराव बोडके -प्रथम संस्करण पृ क्र.13
3) नारी चिन्तन: नयी चुनौतियाँ - डॉ.रामकुमारी गडकर पृ.क्र.6
4) खुदा की वापसी-नासिरा शर्मा- पृ.क्र.64
5) खुदा की वापसी-नासिरा शर्मा- पृ.क्र.73
6) खुदा की वापसी-नासिरा शर्मा- पृ.क्र.74
7) खुदा की वापसी-नासिरा शर्मा- पृ.क्र.74
8) खुदा की वापसी-नासिरा शर्मा- पृ.क्र.74
9) खुदा की वापसी-नासिरा शर्मा- पृ.क्र.77
10) खुदा की वापसी-नासिरा शर्मा- पृ.क्र.79

11) खुदा की वापसी-नासिरा शर्मा- पृ.क्र.121
12) खुदा की वापसी-नासिरा शर्मा- पृ.क्र.123
13) खुदा की वापसी-नासिरा शर्मा- पृ.क्र.126
14) खुदा की वापसी-नासिरा शर्मा- पृ.क्र.130
15) खुदा की वापसी-नासिरा शर्मा- पृ.क्र.134
16) इनसानी नस्ल -नासिरा शर्मा- पृ.क्र.71
17) वेदन विशेषांक - भारतीय महिलाओं का सशक्तिकरण कितना सच कितना झुठ - प्रा.डॉ. दिपक पवार प्र.क्र.108